इन्ना की आवाज़ : सियासी छद्म बनाम आम आदमी

प्रा.डॉ. सदानंद भोसले
पूर्व-अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
skbhosale3131@gmail.com

प्रदीप रंगराव जटाल
सहा. प्राध्यापक एवं विभागप्रमुख
पार्वतीबाई चौगुले कला एवं विज्ञान महाविद्यालय,
(स्वायत्त) मड़गांव-गोवा
prjatal1982@gmail.com

शोध सारांश -

साहित्यिक विधाओं में नाटक सबसे सशक्त मानी जानेवाली विधा है। जो सामाजिक के मन में गहरी पैठ जमाकर अपना प्रभाव डालती है। सामान्य जनता से सीधी और दो टूक बात करने का कारगर तरीका है नाटक। असग़र वजाहत इसी तरह के नाटककार हैं जो आम जनता से सीधी बात करते हैं । उनके नाटकों के विषय भी सामाजिक ही होते हैं। वे अपने नाटकों में तथाकथित अभिजात वर्ग के खिलाफ़ आवाज़ उठाते नजर आते हैं। 'इन्ना की आवाज़' मध्य एशिया की लोककथा पर आधारित एक प्रतीकात्मक नाटक है। जिसके माध्यम से सत्ता की क्रूरता और राजनीतिक षडयंत्र से आम आदमी की आवाज़ को किस तरह दबाया जाता है, उसे दिखाने का सफ़ल प्रयास किया है। साथ ही नाटक में यह भी सिद्ध करने की ईमानदार कोशिश की गई है कि राजनीति में जननायक और ईमानदार व्यक्ति सबसे बड़ा ख़तरा होता है, जिसे रास्ते से हटाने की हर मुमकीन कोशिश की जाती। सत्ता के घिनौने चरित्र को उजागर करने का प्रयास यह नाटक है।

संकेताक्षर - अभिजात्य संस्कृति, राजनीतिक षडयंत्र, निरंकुश शासक, शोषण, गुलामी, भ्रष्टाचार, जननायक, जनवादी चेतना।

असग़र वजाहत जनवादी चेतना के नाटककार हैं। जिन्होंने आरंभ में नाटकों की विषयवस्तु के रूप में इतिहास और लोककथाओं को आधार बनाया है। विशेषकर 'फिरंगी लौट आए', 'इन्ना की आवाज़' और 'अकी' जैसे नाटक। 'इन्ना की आवाज़' नाटक की विषयवस्तु मध्य एशिया की एक लोककथा पर आधारित है। यह नाटक कुल तेरह दृश्यों में विभाजित है। इसकी प्रस्तुति 'नेशनल स्कूल आफ ड्रामा' से निकले अनिल चौधरी ने पंकज कपूर, नीना गुप्ता और दीपक केजरीवाल आदि अभिनेताओं को लेकर की थी। 'इन्ना की आवाज़' एक प्रतीकात्मक नाटक है। इसमें चित्रित प्रसंग एवं परिस्थितियाँ भी प्रतीकात्मक हैं जो राजनीतिक छल-कपट को उद्घाटित करता है। नाटक का प्रमुख पात्र 'इन्ना' सामान्य जन का प्रतिनिधित्व करता नज़र आता है जिसे समरकन्द के बाज़ार से खरीदा है। उसे नाटक में बहुत मेहनती और सलीके से काम करनेवाला आम आदमी (गुलाम) के रूप में चित्रित किया गया है। इसके संदर्भ में दारोग़ा का एक कथन है- "मैंने अपनी ज़िंदगी में सुल्तान के लिए हज़ारों गुलाम ख़रीदे हैं। लेकिन आज तक मुझे इन्ना जैसा गुलाम नहीं मिला। हर काम को इतने सलीक़े से करता है कि उसकी पीठ पर पड़ने के लिए मेरा कोड़ा तरस गया।" [1] इन्ना को इस प्रकार चित्रित किया है कि वह दूसरों की मदद के लिए हरदम तैयार रहता है। लोगों को खाना खिलाना उनकी मदद करना, घोड़ों को पानी पिलाना उसका नित्य का काम है। इस संदर्भ में फसी का कथन है- "मैंने उसे हमेशा हर आदमी के लिए सब कुछ कर देने को तैयार पाया है। उसने बीसियों बार मुझे अपना खाना खिलाया है। अगर उसका साथ न होता तो मैं मर ही जाता। रात गये तक उन घोड़ों को पानी पिलाता रहता है जो समरकन्द और बुखारा से पत्थरों की गाडियाँ खींचकर लाते हैं। मैंने उसे कई बार कहा कि घोड़ों को पानी पिलाने के लिए दूसरे गुलाम हैं। लेकिन वह मेरी नहीं सुनता हर काम खुद..." [2] इन्ना के दिल में जानवरों के लिए बेपनाह हमदर्दी है इसलिए बरसात के दिनों में गाड़ी खींचते हुए घोड़े फिसलकर न गिरे इसलिए वह खुद अपना बोरिया-बिस्तर चिथड़े-चिथड़े कर चढ़ाई के रास्ते पर डालता था। यथा- "म....मैं...घोड़ों को पानी

पिलाया करता था। रात में झोपड़ें के सामने...गाडियाँ निकलतीं...चढ़ाई पड़ती थी...एक दिन पानी बरसा मैंने सोचा घोड़े जब आएंगे तो फिसलेंगे...मैंने अपना बोरिया-बिस्तर चिथड़े-चिथड़े किया...चढ़ाई पर दाल दिया..." [3] वह एक सामान्य गुलाम होते हुए भी उसके मन में मनुष्य और जानवरों के प्रति असीम प्रेम एवं हमदर्दी थी। इन्ना चरवाहों का गीत गाता है। उसकी आवाज़ से लोगों को अजीब सा रूहानी सुकून मिलता है। उसकी आवाज़ में बेपनाह ताकद और कशिश है जिसके सभी लोग दीवाने हैं।

प्रस्तुत नाटक की शुरुआत सुल्तान ने बीस साल पहले जिस महल को बनाने का हुक्म दिया था, वह बनकर तैयार हो जाता है और उस महल के दरवाज़े पर केवल सुल्तान का नाम लिखना बाकी रह जाता है। परंतु सुल्तान का नाम बार-बार लिखने के बावजूद कोई करिश्मा हो जाता है और सुल्तान का नाम अपने आप मिट कर उसके स्थान पर इन्ना का नाम आकार लेता है। अर्थात सुल्तान का नाम मिट जाना और इन्ना का नाम ख़ुद-ब-ख़ुद उभरकर आ जाना यह दर्शाता है कि सही मायने में आम जनता का 'मसीहा' और 'बादशाह' इन्ना ही है। सुल्तान को यह बात बिलकुल भी रास नहीं आती। उसे लगता है कि समरकन्द के बाज़ार से कौड़ियों के दाम ख़रीदा गया यह गुलाम बादशाह सुल्तान की बराबरी कैसे कर सकता है? असग़र वजाहत ने 'महाबली' नाटक में भी सत्ता के इसी तरह के चरित्र को उजागर करने का प्रयास किया है। जिसमें कवि तुलसीदास सम्राट अकबर द्वारा सीकरी आने के अनुरोध को मानने से इनकार करते हैं। यही बात अकबर को अस्वस्थ कर देती है और वह स्वयं तुलसीदास से बनारस घाट पर मिलने जाता है। तुलसीदास को सीकरी बुलाने का सत्य बताता है। यथा- "जिस तरह एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं और एक मुल्क में दो बादशाह नहीं रह सकते उसी तरह एक मुल्क में दो महाबली भी नहीं हो सकते...जब हमें कहीं से यह इत्तिला मिलती है कि कोई और भी... तो हम उसे तोड़ते नहीं जोड़ लेते हैं... कुछ लोग ऐसे होते हैं... जिन पर फ़तेह हासिल करना...बड़ी-से-बड़ी फ़ौज को हराने से मुश्किल होता है...हमारी नज़र में गोस्वामी तुम..." [4] इस प्रकार राजसत्ता अपने बराबरी का किसी को होने नहीं देती। उसे या तो अपने साथ शामिल करते हैं या फिर हमेशा के लिए ख़त्म कर देते हैं। प्रस्तुत नाटक में भी सुल्तान को बहुत गुस्सा आता है और वह वज़ीरे आज़म से इन्ना का क़त्ल करने का हुक्म देता है। लेकिन वज़ीरे आज़म के समझाने पर कि इन्ना आवाम में बहुत ही प्रिय है। उसे देखने दूर-दूर से लोग आते हैं। वज़ीरे आज़म का सुल्तान के साथ संवाद है, "सुल्ताने आलम, दूरदराज से लाखों लोग इन्ना को देखने आते हैं। उसके झोंपड़े के चारों तरफ भीड़ लगी रहती है। वे लोग इन्ना की सिर्फ एक झलक पाने के लिए बेताब रहते हैं (ठहरकर) अगर उस वक्त उनसे इन्ना उनका सिर भी मांगे तो वे दे सकते हैं। गनीमत यही हैं हुजूर कि इन्ना ने अभी तक उनसे कुछ मांगा नहीं। इन्ना अब सिर्फ एक आदमी नहीं रहा गया है खुदाबंद।" [5] यह सुनकर सुल्तान बहुत गुस्सा होता है और चिंतित भी। उसे लगता है इन्ना उसके खिलाफ़ बगावत कर रहा है और उसे कुचल देना चाहिए। परंतु हालात को देखते हुए वज़ीरे आज़म उसे समझाता है कि ऐसा कुछ करने से आवाम में बगावत भड़क सकती है। इसलिए इस स्थिति को लडाई से नहीं दिलोदिमाग से हल करना चाहिए। वज़ीरे आज़म का सुल्तान से संवाद है, "सुल्ताने आलम कुछ लड़ाइयां मैदाने-जंग में लड़ी जाती हैं और कुछ लड़ाइयों के फैसले दिलोदिमागों में होते हैं। इन्ना के जिस्म पर नहीं उसके दिल पर वार होना चाहिए सरकार।" [6] लाख कोशिशों के बावजूद भी इन्ना का नाम दरवाज़े से नहीं मिटता।

सुल्तान समझ जाता है कि जब तक इन्ना में इंसानियत का जज़्बा रहेगा तब तक महल के दरवाज़े से उसका नाम नहीं मिट सकता। इसलिए वह षडयंत्र रचता है जिससे न इन्ना वाकिफ़ है न आवाम। वह मल्का को इन्ना के पास भेजता है। वह भी बड़ी चालाकी से इन्ना को यह कहती है कि तुम अगर वज़ीरे आज़म का ओहदा स्वीकार करते हो तो आवाम की ज़िंदगी और बेहतर कर सकते हों। मल्का का इन्ना से संवाद है, "बात बहुत साफ़ हैं इन्ना। तुम जो काम करना चाहते हो उसे करने के मौके तुम्हें फराहम किये जा रहे हैं। अगर तुम्हारे दिल में ख़िदमत का जज़्बा है तो तुम लाखों लोगों की ख़्वाहिशात को पूरा कर सकते हो, उनकी जिंदगी बेहतर बना सकते हो...सोचो इन्ना ये कोई मामूली काम नहीं है।" [7] इस तरह मल्का राजनीतिक दांवपेच में सफ़ल भी हो जाती है। और विवशता में इन्ना को वज़ीरे आज़म का ओहदा स्वीकार करना पड़ता है।

किसी भी राष्ट्र के राजनीतिक इतिहास में यह देखा गया है कि सत्ता के खिलाफ़ जब-जब किसी ईमानदार और मेहनतकश आम आदमी ने आवाम की भलाई हेतु आवाज़ उठाने की कोशिश की है, उसे या तो मौत के घाट उतारा गया है या फिर षडयंत्र पूर्वक राजनीति में उसका 'दाखिला' करवाया गया है। उनके लिए रेड कार्पेट बिछाई जाती है। जिसके माध्यम से हमेशा-हमेशा के लिए उसकी आवाज़ को दबाया जाता है। यदि वह कुछ बोलने की कोशिश भी करे तो सियासत की ऊँची दीवारों में उसकी आवाज़ दब कर रह जाती है। 'इन्ना की आवाज़' नाटक के घटना प्रसंग को यदि वर्तमान राजनीति के साथ जोड़कर देखा जाए तो समझ में आता है कि राजनीति कितनी घिनौनी होती है। इन्ना जैसे आम आदमी को अच्छे कामों के कारण आम जनता जब उसे अपना मसीहा मानने लगती है तब यही बात सियासत के नुमाइन्दो का सिरदर्द बन जाती है। तब यही सियासी लोग उसे

खतरा समझकर हमेशा के लिए दूर करना चाहते हैं। लेकिन आवाम के मन में उसके प्रति अपार प्रेम और सहानुभूति को देखते हुए षडयंत्र रचाकर उसे अपने साथ कर लेते हैं और सदा के लिए उसकी आवाज़ को दबा देते हैं।

राजनीति की यह बहुत बुरी आदत रही है कि एक बार व्यवस्था का मुकुट धारण करने पर वह सबसे पहले आपके मनुष्यत्व को समाप्त कर देती है और इंसानियत का गला घोटकर अपनत्व को दूर कर देती है। उसके स्थान पर अधिकार लिप्सा, सत्ता का भोग एवं लोलुपता उस पर हावी हो जाती है और वह किसी की परवाह नहीं करता। केवल अमानवीय कृत्य करने लगता है। वरन् अपनी मंजिल तक पहुँचने की उसकी अदम्य इच्छा और अधिक प्रबल हो जाती है। नाटक में इन्ना के साथ भी यही होता है। इच्छा के विरुद्ध वज़ीरे आज़म का ओहदा प्राप्त करने पर भी इन्ना का आवाम के प्रति वही विचार रहता है। वह लगातार दारोगा को आवाम की भलाई के लिए कदम उठाने के लिए कहता है। परंतु इन्ना यह नहीं जानता था कि उसके आदेश की कोई अहमियत नहीं है। वह तो केवल कठपुतली आज़म बन कर रह जाता है। व्यवस्था इन्ना की आवाज़ को मार देती है। पहले पहल वह आवाम की भलाई करता नजर आता है परंतु उसके आदेश पर किसी प्रकार का कोई अमल नहीं किया जाता। उसके आदेश का अपनी सुविधा से अर्थ लेकर आवाम पर जुल्म ढाया जाता है। यह कहकर कि यह वज़ीरे आज़म इन्ना का आदेश है। उसे राज्य की आवाम की तकलीफ़ों से बेख़बर रखा जाता है। एक दिन इन्ना का मित्र फसी इन्ना से मिलने आता है और बाहर की सारी हकीकत बयां करता है। उदाहरण दृष्टव्य है, "इन्ना, तुम अगर हुक्म देते हो कि प्यासे आदमी को पानी पिलाया जाये तो तुम्हारे सिपाही उसे नदी में गर्क कर देते हैं। तुम्हारे इस हुक्म पर कि आवाम सेहतमंद नजर आए, तुम्हारे सिपाहियों ने पीट-पीट कर उसके जिस्म इतने सूजा दिये कि वो सेहतमंद नजर आने लगे। उन्होंने लोगों को लोहे के जूते पहना दिये कि वो चल-फिर ही न सके। इन्ना... तुम्हारे जलाये हुए चिराग से मुल्क में आग लग गई है।" [8] किस तरह से राजनीति अच्छे लोगों की अच्छाई को समाप्त कर जनता के खिलाफ़ इस्तेमाल करती है और उन्हें कानोकान ख़बर तक नहीं लगने देती।

सर्व विदित है कि सत्ता और कुर्सी का मोह राजनीतिक व्यक्ति से कभी छूटा है और न छूटेगा। इन्ना के साथ भी वही होता है, वह इस राजसी ठाट-बाट एवं भोग विलास का आदि हो जाता है। वह नित्य शराब में डूबा नर्तकियों के बीच घिरा रहता है और पूरी तरह उसे विलासी बनाया जाता है। जो पहले कभी दूसरों का दुख बाँटता था वह अब उन्हीं के खिलाफ़ हुक्म देने से आवाम पहले से अधिक पीड़ा सहती है। सत्ता के मद में आकर उसने आवाम का इतना शोषण किया कि वह मनुष्य नहीं बल्कि पिशाच बन गया। अपने हुक्म से उन्हीं बेकसूर लोगों को मौत के घाट उतार दिया। सुल्तान एक स्थान पर इन्ना से कहता है- "नहीं इन्ना, तुमने उससे ज्यादा किया है। हमने अपनी पूरी जिन्दगी में जितने लोगों को सजा दी है, उतने लोगों को तो तुमने दो साल में मौत के घाट उतार दिया है।" [9] इसी व्यवहार के चलते इन्ना के भीतर की इंसानियत धीरे-धीरे खत्म हो गयी और एक दिन महल के दरवाज़े से इन्ना का नाम मिट गया।

सुल्तान अपने मक़सद में सफ़ल हो जाता है। वह जानता था कि आवाम के मन में इन्ना के प्रति जो प्रेम है वह मिट नहीं जाता तब तक महल के दरवाज़े से उसका नाम भी नहीं मिट सकता था। इसलिए अपने षडयंत्र का जाल बिछाकर उसी के द्वारा आवाम पर अत्याचार करवाये। आखिरकार सुल्तान अपने इरादों में कामयाब हुआ। इन्ना का नाम हमेशा के लिए दरवाज़े से मिट गया। इन्ना का नाम दरवाज़े से मिट जाना उसकी इंसानियत का हैवानियत एवं पशुता में बदल जाना है। अंत में सुल्तान उससे जबरदस्ती वज़ीरे आज़म का ओहदा भी छीन लेता है। अब 'इन्ना' न तो 'इन्ना' रह जाता है न वज़ीर। सुल्तान का यहाँ एक मार्मिक संवाद है, "अब तुम न इन्ना हो न हमारे वज़ीरे आज़म। तुम कुछ भी नहीं हो इन्ना। अब तुम गा भी नहीं सकते, चरवाहों का वह नगमा जिसे सुनकर लोग तुम्हारे दीवाने हो जाया करते थे गाओ...गाकर देखो। गाओ...कोशिश करो..."[10] इस तरह इन्ना को सुविधापरस्त ज़िंदगी तो मिल गई किन्तु वह पाक आवाज़ नहीं रही जिससे वह चरवाहों के गीत गाता था। यही वर्तमान राजनीति की त्रासदी है। जो इस चक्रव्युव में फंस जाता है फिर वह कहीं का नहीं रहता।

समय-समय पर पूंजीवादी व्यवस्था ने सामान्य जनता को पंगु एवं निर्जीव बनाने की बराबर कोशिश की है। जब-जब आम जनता से कोई जन प्रतिनिधि के रूप में उभरने की कोशिश करता है। तब-तब व्यवस्था में बैठे लोगों में डर पैदा हुआ है। उनके अनुसार जन प्रतिनिधि प्रस्थापित लोगों के लिए ख़तरा बन जाता है। उन्हें इस बात का निरंतर डर लगा रहता है कि कहीं ये जन प्रतिनिधि के रूप में नया नेतृत्व बनकर न उभरे। जिससे उनकी सत्ता को ख़तरा पैदा हो। ऐसी स्थिति में वे तमाम प्रकार के षडयंत्र रचते हैं और उन्हें अपने रास्ते का काँटा समझकर उसे हटाने के लिए सत्ता का लालच देकर अपना पालतू कुत्ता बना देते हैं। उसकी इंसानियत और सच्चाई का गला घोंट देते हैं। नाटक में चित्रित सुल्तान भी एक महत्वाकांक्षी एवं निरंकुश शासक है। वह किसी भी

क़ीमत पर आवाम पर अपना अधिकार जताना चाहता है और अपने वर्चस्व को बनाए रखने की कोशिश करता है जो वर्तमान राजनीति में और अधिक प्रासंगिक लगता है।

निष्कर्षतः 'इन्ना की आवाज़' नाटक वर्तमान समय में राजनीतिक चेहरे को बेनक़ाब करने की कोशिश करता है। जिसके माध्यम से राजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं निरंकुश शासक द्वारा हो रही मानवीय मूल्यों की हत्या को दिखाने का सफ़ल प्रयास किया है। साथ ही बेख़ौफ़ होकर यह भी सिद्ध करने की ईमानदार कोशिश की है कि राजनीति में जननायक और ईमानदार व्यक्ति सबसे बड़ा खतरा होता है। इसलिए छल-छद्म से उसे व्यवस्था में शामिल करते हुए अपने हाथों की कठपुतली बनाकर इशारों पर नचाया जाता है। अंततः उसकी ईमानदारी और अच्छाई को ख़त्म करके उसका अस्तित्व ही मिटाने का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार राजनीति के क्रूर एवं अमानवीय चेहरे को बेनकाब करने का सफ़ल प्रयास यह प्रतीकात्मक नाटक है।

संदर्भ सूची -

1) असग़र वजाहत, 'असगर वजाहत के आठ नाटक (इन्ना की आवाज़)' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली 2016 पृष्ठ. 46

2) वही. पृष्ठ- 46

3) वही. पृष्ठ- 54

4) असग़र वजाहत, महाबली, राजपाल एंड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 2019 पृष्ठ. 90

5) असग़र वजाहत, 'असगर वजाहत के आठ नाटक (इन्ना की आवाज़)' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली पृष्ठ. 52-53

6) वही. पृष्ठ- 52

7) वही. पृष्ठ- 58

8) वही. पृष्ठ- 72-73

9) वही. पृष्ठ- 74

10) वही. पृष्ठ- 77

*सं.पल्लव, बनास जन- हर क़ैद से आज़ाद असग़र वजाहत, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली 2017

****